डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज, आरा

विषय - संस्कृत, बी० ए० स्नातक (प्रतिष्ठा)
द्वितीय वर्ष, तृतीय पत्र
कादम्बरी - शुकनासोपदेश
गद्यांश व्याख्या :-

Date 14/07/20
Page

हरति च सकलमति मलिनमप्यन्धकारमिव दोषजातं प्रदोषसमय निशाकर इव गुरूपदेशः । प्रशमहेतुर्वयः परिणाम इव पलितरूपेण शिरसिजजालममली कुर्वन् गुणरूपेण तदेव परिणमयति ।

सान्वय व्याख्या :-

(गुरूपदेशः) गुरु का उपदेश (समस्तम्) सम्पूर्ण (अतिमलिनमपि दोषजातम्) अत्यन्त मलिन दोषों को ऐसे हटा देता है जैसे (प्रदोषसमय निशाकर इव अन्धकारम् हरति) प्रदोषकालीन चन्द्रमा अन्धकार को। अन्तःकरण की (प्रशमहेतुः) शान्ति का मूल कारण गुरु का उपदेश (तदेव) उस दोष समूह को ही (गुणरूपेण परिणमयति) गुणों में परिवर्तित कर देता है, जैसे (वयःपरिणाम) वृद्धावस्था (शिरसिज-जालममली कुर्वन्) केश समूह को सफेद करती हुई उन्हीं बालों को श्वेतरूप में परिणत कर देती है।

भावार्थ - वृद्धावस्था अवस्था विशेष के कारण या धातु क्षीण हो जाने के कारण इन्द्रियों और मन को व्यापार विरत करता है तथा गुरु का उपदेश विवेक उत्पन्न कर मन को निग्रह द्वारा शान्ति प्रदान करता है। वार्द्धक्य पहले से ही वियमान बालों के

Scanned with CamScanner

कालेपन को ही धवलता में परिणत कर देता है। इसी प्रकार गुरु का उपदेश भी पहले से ही विद्यमान 'काम' (वासना, इच्छा) को धर्म कार्यों में, 'क्रोध' को दण्ड व्यवस्था में, 'लोभ' को दानादि में तथा 'मात्सर्य' को अपने दुष्टाचरण में प्रवृत्त कर इन्हीं दोषों को ही गुणों में बदल देता है। इस प्रकार गुरूपदेश का साधर्म्य यहाँ वार्द्धक्य (वयःपरिणाम) से स्थापित किया गया है, कामादि दोष समूह का साम्य बालों (शिरसिजजाल) से तथा गुणों का साम्य पलित (पके हुए बाल) से किया गया है।

टिप्पणी- प्रस्तुत गद्यांश में गुरु के उपदेश की उपमा सायंकालीन चन्द्रमा से तथा नितान्त कलुषित काम-क्रोध आदि दोष समूह की उपमा अत्यन्त मलिन अन्धकार से की गई है। इस प्रकार यहाँ श्लेषानुप्राणित 'उपमा' है।
'प्रशमहेतुः' और 'अमलीकुर्वन्' पद दोनों पक्षों में श्लिष्ट है, अतः यहाँभीश्लेषानुप्राणित 'उपमा' अलंकार है।
प्रशमहेतुः - प्रशमस्य हेतुः (ष०तत्पु०), अमलीकुर्वन्- न मलम् अमलम्, न अमलम् अनमलम्, अनमलम् अमलं कुर्वन्, अमल+च्वि कृ+शतृ प्र० ए०।
परिणमयति- परि+नम+णिच् लट् प्र० पु० एकवचन।

Scanned with CamScanner